OUR HERITAGE

ISSN (Online) : 0474-9030 Vol-67,
Impact Factor (2020) - 6.8,

Special Issue-11, Dated 1st February 2020,

✸EDITORIAL BOARD✸
✸EDITOR-IN-CHIEF✸
Dr. Rajabhau Narayanrao Karpe

✸ASSOCIATE EDITOR✸
Dr. Vasant Gajaba Zende

✸EDITORIAL BOARD✸
Dr. B.R. Sharma
(Principal, P.M.P. College, Patihan)
Dr. P.S. Turukmane
Dr. (Mrs.) S.B. Patil
Mr. Amol Maske
Mr. Ratnadeep Gaikwad

OUR HERITAGE

ISSN (Online) : 0474-9030 Vol-67, Special Issue-11,
Dated 1st February 2020, Impact Factor (2020) - 6.8,

अ.क्र.	शीर्षक	लेखक	पृष्ठ
120	Sahitya Aur Sanskruti Ke Chitere Kavi Dr.Jarra साहित्य और संस्कृति के चितेरे कवि डॉ.जर्रा	Professor Sayyed Shaukat Ali प्रोफेसर सय्यद शौकत अली	593-597
121	'Shivaji' Me Nari Ke Prati Udar Drushtikon 'शिवाजी' में नारी के प्रति उदार दृष्टिकोण	Dr.Shaikh Saibashirin Harunrashid Dr.Shaikh Mukhtyar Shaikh Wahab डॉ.शेख सैबाशिरीन हारूणरशीद डॉ.शेख मुख्त्यार शेख वहाब	598-603
122	Loksahitya - Samaj Aur Sanskruti लोकसाहित्य - समाज और संस्कृति	Vidhya Baburao Khade विद्या बाबुराव खाडे	604-605
123	'Yadon Ke Pancchi' Me Vyakta Dalit Samaj Aur Sanskruti 'यादों के पंछी में' व्यक्त दलित समाज और संस्कृति	Bhatkar S.S. भटकर एस. एस.	606-608
124	Kolhati Samaj Aur Unki Sanskruti ('Chora Kolhati Ka' Ke Vishesh Sandarbha Me) कोल्हाटी समाज और उनकी संस्कृति ('छोरा कोल्हाटी का' के विशेष संदर्भ में)	Professor Aashwinikumar Chincholikar Professor Pramod Patil प्रोफेसर आश्विनीकुमार चिंचोलीकर प्रोफेसर प्रमोद पाटील	609-612
125	Hyderabad Mukti Aandolan Me Aurad Shahajani Nagari : Etihasik Drushit Se हैदराबाद मुक्ति आंदोलन में औराद शहाजानी नगरी : ऐतिहासिक दृष्टि से	Dr.Vyas C.P. डॉ.व्यास सी.पी.	613-616
126	Sant Eknath Aur Samaj Darshan संत एकनाथ और समाज-दर्शन	Professor Bewle A.J. प्रोफेसर बेवले ए. जे.	617-623
127	Marathwada Ko Dakhini Hindi Sahitya Ki Den मराठवाड़ा को दक्खिनी हिंदी साहित्य की देन	Sayyad Tipusultan Sayyadnoor Dr.Balaji Gaikwad सय्यद टिपुसुलतान सय्यदनूर डॉ.बालाजी गायकवाड	624-628
128	Banjara Samaj Ki Sanskruti Ka Etihasik Adhyayan बंजारा समाज की संस्कृति का ऐतिहासिक अध्ययन	Dr.Naik N.D. Jadhav Gayatri Sahebrao डॉ.नाईक एन.डी. जाधव गायत्री साहेबराव	629-631
129	Marathwada Ka Sant Sahitya मराठवाड़ा का संत साहित्य	Dr.Nitin Mane डॉ.नितीन माने	632-635

OUR HERITAGE

ISSN (Online) : 0474-9030 Vol-67, Special Issue-11,
Dated 1st February 2020, Impact Factor (2020) - 6.8,

मराठवाडा का संत साहित्य

डॉ. नितीन माने

सहाय्यक प्राध्यापक, हिंदी विभाग,

लाल बहादूर शास्त्री वरीष्ठ महाविद्यालय,

परतूर जि. जालना

संत साहित्य भारतवर्ष की महत्वपूर्ण उपलब्धि है । संत साहित्य के बीज वैदिककाल मे पाये जाते है। संत साहित्य शैव, शाक्त, वैष्णव, सिध्दों, नाथों, विविध सम्प्रदायों के माध्यम से प्रवाहित होकर इसने एक व्यापक रुप धारण किया है। संत साहित्य भारतीय समाज का नेतृत्व एवं संस्कृति का वहन करता है। विविध भक्ति सम्प्रदायों से जुडे संत कवि निचली जातियों से संबंधित थे। परिणाम स्वरुप इन संत कवियों ने समाज हित के लिए अपने साहित्य के माध्यम से जाति-पाति, उँच-निचता, भेद-भाव, छुआ-छुत आदि बातों का विरोध किया है। इस बात का सुत्रपात महाराष्ट्र, मराठवाडा के संतों से ही माना जाता है। आ. शुक्ल अपने इतिहास ग्रथ में लिखते है कि धयह सामान्य भक्तिमार्ग एकेश्वरवाद का अनिश्चित स्वरुप लेकर खडा हुआ, जो कभी ब्रम्हवाद की ओर ढलत था और कभी पैगंबरी खुदावाद की ओर। यह 'निर्गुणपंथ' के नामसे प्रसिध्द हुआ। इसकी ओर ले जानेवाली सबसे पहली प्रवृत्ति जो लक्षित हुई, वह उँच नीच और जाति-पाति के भाव का त्याग और ईश्वर की भक्ति के लिए मनुष्य मात्र के समान अधिकार का स्वीकार था। इस भाव का सुत्रपात भक्तिमार्ग के भीतर महाराष्ट्र और मध्यदेश में नामदेव और रामानंद जी द्वारा हुआ।ध 1 और यही समानता का भाव समाज में स्थिरता लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

भक्ति सम्प्रदायों ने केवल बाह्यावडंबरों का त्याग ही नहीं किया बल्कि परम्परागत आचार विचारों को आश्रय देकर जीवित रखने का भरसक प्रयास भी किया है। और इसी के माध्यम से भक्ति आंदोलन का सुत्रपात हुआ है। हिंदू और मुस्लिम धर्म के संपर्क से दोनों एक दूसरे से प्रभावित होकर अपने में सुधार लाने लगे थे। डॉ. नगेंद्रग इस विषय में बताते है कि - धहिंदू धर्म इस्लाम के संपर्क से मात्र व्यक्तिगत साधना का केंद्रग न रहकर सामुहिक साधना का रुप धारण करने लगा था और उसमें आंदोलनकारी प्रवृत्तियाँ उभरने लगी थी। फलस्वरुप प्रायः सभी धर्मों में युगानुरुप परिस्थिति के अनुसार.... आत्मपरिक्षण और परिस्थिति परिक्षण द्वारा आवश्यक सुधार करके परम्परागत आचार-विचार को किसी न किसी रुप में प्रश्रय देकर उन्हें जीवित रखना था। इस प्रयास में वैष्णवधर्म ने भागवत संप्रदाय के रुप में नेतृत्व किया और व्यापक प्रभाव डाला, जिसके माध्यम से भक्ति - आंदोलन का सुत्रपात हुआ।ध 2 इस भक्ति आंदोलन के सुत्रपात में महाराष्ट्र मराठवाडा के संतों का योगदान अनन्यसाधारन है।

OUR HERITAGE
ISSN (Online) : 0474-9030 Vol-67, Special Issue-11,
Dated 1st February 2020, Impact Factor (2020) - 6.8,

मराठवाडा में सत कवियों की परम्परा 12 वी शती, नामदेव से बराबर चली आ रही है। इस परपरा में कई सत कवियों का नाम लिया जाता है - सत नामदेव, सत ज्ञानेश्वर, सत जनाबाई, सत रामदास, सत एकनाथ, सत गोरोबा काका, संत दासोपत आदि। ये सभी सत वारकरी सम्प्रदाय के अनुयायी है।

मराठवाडा में वारकरी सम्प्रदाय भक्ति भाव का वहन करनेवाली पावन गगा है। जिसका प्रवाह दिनों दिन व्यापक रूप धारन करने लगा हैं। मराठवाडा, महाराष्ट्र में वारकरी सम्प्रदाय का केंद्रग पंढरपूर के विठोबा का मदिर है। वारकरी सम्प्रदाय का 'वारकरी' शब्द 'वारी' शब्द से बना है। इस विषय में प्रा. वेदप्रकाश वेदालंकार लिखते हे कि - ध 'वारी' का अर्थ है - विट्ठल देवता के दर्शन पाने प्रत्येक मास की एकादशी तिथि को - विशेषतः आषाढ एवं कार्तिक मास की शुक्ल-पक्ष की एकादशी को पंढरपूर की वारी करना। जो भक्त ऐसी यात्रा नियमित रूप से करता है वह वारकरी, अर्थात वारी करनेवाला वारकरी।ध 3 पंढरपुर, पंढरपुर का विट्ठल, विट्ठल का मंदिर, चंद्रभागा, ज्ञानोबा तुकाराम और माऊली इन सबकी एकरुपता अर्थात वारी और वारी करनेवाला वारकरी संम्प्रदाय। सम्प्रदाय के लिए सर्वस्वी विट्ठल, उसी प्रकार सभी संत मडली। इन संतों ने जो शिक्षा दी है उससे मराठवाडा, महाराष्ट्र ने समता-बंधुता की संस्कृति अंगिकृत की है।

वारकरी का अर्थ है पंढरपूर के विट्ठल मंदिर की परिक्रमा करनेवाला। वारकरी सम्प्रदाय में पच परमेश्वर की पूजा की जाती है। ज्ञानेश्वर ने निराकार ईश्वर की आराधना की है। परंतु इनका इष्टदेव विट्ठल है, जो श्रीकृष्ण के प्रतिक है। इस सम्प्रदाय में ब्रम्हा को निर्गुण माना है। इसके अनुयायी भक्ति साधना को विशेष महत्व देते है। भजन, किर्तन नाम स्मरन, चिंतन, में सदा लिन रहते है। तो कभी कभी नृत्य गान करते हुए भाव-विभोर हो जाते है। इस विषय में डॉ. उषा मोडक लिखती है कि, धसंतांचे अभंग गात गात वारकरी आळंदी ते पंढरपूर हा पायी प्रवास सुखेने करतात, नव्हे त्या अभंगवाणीत अशी एक दुर्दम्य शक्ति आहे की भक्तिभावाने गायलेला अभंग भक्तिरस निर्माण करतो व तो गात्रागात्रात उर्जा निर्माण करुन हा 'विट्ठल वेडा' वारकरी अक्षरशः भावविभोर अवस्थेत नाचायला लागतो. या भागवत धर्माची किमयाच अशी विलक्षण आहे. त्याचे कारण म्हणजे आजही महाराष्ट्रात ही भागवत धर्माची पताका मोठ्या दिमाखात फडकत राहिली आहे.ध 4

वारकरी सम्प्रदाय और उनके लिए पंढरपूर तिर्थक्षेत्र का महत्व विषद करते हुए 'चोखा मेळा चरित्र आणि अभंग' में बताया गया है कि धवारकऱ्यांचे उपास्य दैवत श्री विट्ठल हे भगवान श्रीकृष्णाचे बाल रुप आहे असे समजण्यात येते व वारकरी लोकांची तशी श्रध्दा आहे. त्या प्रमाणे भागवत धर्मातील अर्थात वारकरी पंथातील उपासक सगुणोपासना, नामस्मरण, हरिकिर्तन, पंढरी व आळंदीच्या वाऱ्या इत्यादी... विट्ठल भक्तांची साधना बनलेली असते. वारकरी लोक या गोष्टीकडे फार आदराने पाहतात. ही साधना आज कित्येक शकते अव्याहतपणे दिवसें दिवस गंगेच्या प्रवाहा प्रमाणे वाढत्या प्रमाणावर चालु आहे. भागवत धर्माची शिकवणूक समानतेची आहे. देवापूढे कुठल्याही जातिचा मनुष्य येऊन भागवत धर्मातील साधनांचा अवलंब करुन आपली आत्मोन्नति करुन घेण्यास मोकळा असतो. देवापुढे उच्चनीच हा भेदभाव नाही.ध 5 इसी कारण वारकरी सम्प्रदाय कि अपनी एक अलग पहचान है, लोगों का अलग दृष्टीकोण रहा

OUR HERITAGE
ISSN (Online) : 0474-9030 Vol-67, Special Issue-11,
Dated 1st February 2020, Impact Factor (2020) - 6.8,

है। इस सम्प्रदाय के संतों ने जो अतुलनीय कार्य किया जिससे सम्प्रदाय का विशाल भवन खडा हो गया है। इसके बारे मै बहिणाबाई ने एक अभंग लिखा है -

ध संतकृपा झाली । इमारत फळा आली ॥
ज्ञानदेव रचिला पाया । उभारिले देवालया ॥
नामा तयाचा किकर । तेणे केला विस्तार ॥
जनार्दन एकनाथ । खांब दिला भागवत ॥
तुका झालासे कळस । भजन करा सावकाश ॥ध 6

इसका अर्थ यह है कि संतों की कृपा से भक्ति भवन पूरा हुआ है। इसके लिए ज्ञानदेव जी ने मंदिर की नीव रखी तो संत नामदेवने भक्ति भवन का विस्तार किया । संत जनार्दन, एकनाथ जी ने तथा भागवत धर्म ने भक्ति भवन के खंभे बनाये तो इस भक्ति मंदिर का शिखर संत तुकारा बने । इस प्रकार मराठवाडा के संतों ने वारकरी सम्प्रदाय को विकसित किया जो आज भी व्यापक रुप मै प्रवाहित होने लगा है।

वारकरी सम्प्रदाय के संतों ने केवल उपदेश देने का कार्य नही किया बल्कि उन्होने पहले अपने आचरन मै लाया, आत्मपरिक्षण करके हीत अहित की दृष्टि से परखा और पून: उसे लिपिबध्द करके समाज के लिए समर्पित किया। इनका साहित्य मराठवाडा ही नही महाराष्ट्र का आचारविचार, रहन सहन, खान-पान, पहनाव की दृष्टी से भी पथ प्रदर्शन करता है।

सत ज्ञानेश्वर जी की 'ज्ञानेश्वरी', संत एकनाथ जी की 'एकनाथी भागवत' संत तुकाराम की 'अभंग गाथा' ये तीन ग्रंथ वारकरी सम्प्रदाय की महत्वपूर्ण उपलब्धी है। इन रचनाओं के बारे मै प्रा. वेदकुमार वेदालंकार लिखते है। धसंत ज्ञानेश्वर की 'ज्ञानेश्वरी' सत एकनाथ की 'एकनाथी भागवत' एवं संत तुकाराम की 'अभंग गाथा' यह तीन ग्रंथ 'ग्रंथत्रयी' वारकरी सम्प्रदाय की 'प्रस्थानत्रयी' समान है। ध 7 इन संतों की रचनाए मराठवाडा, महाराष्ट्र के घर घर मै पायी जाती है ।

वारकरी सम्प्रदाय मे दिक्षा लेनेवाले व्यक्तिको दिक्षा देने वाले गुरु से एक महामंत्र दिया जाता है। 'रामकृष्ण हरी' इस मंत्र का जाप करना पडता है। साथ ही वारकरी को गुरु से कुछ बातों को ग्रहण करना पडता है जैसे - 1) कंठ मै तुलसीमाला धारण करना, 2) माथे पर गोपिचंदन, काले रंग का बुक्का लगाना, 3) सत्य बोलना, 4) पर स्त्री को माता समान मानना, 5) मांसाहार का त्याग, 6) आषाढी - कार्तिक की वारी करना, 7) 'रामकृष्ण हरी' मंत्र का जप करना, 8) हरिपाठ का गान करना, 9) अपने कार्य पुरी निष्ठासे करना आदि।

मराठवाडा के संतों ने अपनी रचनाओं के लिए जिस भाषा का प्रयोग किया वह लोकभाषा, आम जनजीवन जीनेवाले लोगों की भाषा को अपनाया है। इन संतों के समय काव्य की भाषा संस्कृत 'महाराष्ट्री प्राकृत' भाषा का प्रयोग किया जाता था। परंतु मराठी भाषा को साहित्य, की भाषा के रुप मे प्रतिष्ठीत करने का श्रेय संत ज्ञानेश्वर जी को दिया जाता है। उन्होने धसाधारणजन संस्कृत भाषा से अपरिचित है, यह जानकर अध्यात्म को सरल जनभाषा मै प्रस्तुत करके उन्होने एक ओर भक्ति का

प्रसाद किया, तो दुसरी और मराठी भाषा को शक्ति दी।ध इन संत कवियों मे अपने भाषा के प्रति स्वाभिमान छलकता हुआ दिखाई देता है।

संत नामदेव, एकनाथ, मुक्ताबाई, जनाबाई, गोरोबा काका, संत सावता, चोखा मेळा आदि संतों ने अपनी भावाभिव्यक्ति के लिए कई छंदो का प्रयोग किया। जैसे साकी, दींडी, कटाव, पोवाडा आदी। किंतु संतों ने 'अभंग' एवं 'ओवी' छंदो का मुख्य रुप से प्रयोग किया है। संत ज्ञानेश्वर ने 'ज्ञानेश्वरी', 'अमृतानुभव', 'ओवी' छंद में लिखी है तो 'पसायदान' अभंग में।

निष्कर्षत: हम कह सकते है कि भक्ति परम्परा मे मराठवाड़ा, महाराष्ट्र के संत शुरु से ही सक्रिय रहे है। यह परम्परा 12 वी शती से आज तक विविध सम्प्रदायों के माध्यम से प्रवाहित होती आयी है। संतों ने अपनी अभिव्यक्ति के लिए भावानुकूल लोकभाषा मराठी को साहित्य की भाषा बनाया है। साथ ही भजन, किर्तन, गायन के लिए अनुकूल छंद - 'ओवी', 'अभंग' को चुना। इस प्रकार मराठवाड़ा के संतोंने अपने आचार-विचार, भावाभिव्यक्ति से जनमानस को, साहित्य, समाज, संस्कृति को प्रभावित किया है। यह अपने आप मे एक महती उपलब्धि है।

1) हिंदी साहित्य का इतिहास - आ. शुक्ल, पृ.स. 96 - 97
2) हिंदी साहित्य का इतिहास - डॉ. नगेंद्र, डॉ. हरदयाल, पृ.सं. 94
3) मराठी संत काव्य - प्रा. वेदकुमार वेदालंकार, पृ.सं. 9
4) जगतगुरु श्री संत तुकाराम महाराज - स्मारक ग्रंथसंपादक - अँड. शैलजा ज्ञानेश्वर मोळक, पृ.सं. 200
5) श्री संत चोखा मेळा : चरित्र आणि अभंग - संपादक स.भा. कदम, पृ.सं. 27
6) मराठी संत काव्य - प्रा. वेदकुमार वेदालंकार - पृ.सं. 10
7) मराठी संत काव्य - वेदकुमार वेदालंकार - पृ.सं. 12
8) मराठी संत काव्य - वेदकुमार वेदालंकार - पृ.सं. 14